रमेश चन्द्र

वरिष्ठ साहित्यकार, हिंदी, अंग्रेजी और तमिल में साहित्य) एवं साहित्येहतर विधाओं पर 30 पुस्तरकें, 13 पुरस्कार
संपर्क- 1116, सेक्टर 9-ए (ईएसआई अस्पताल के पीछे), गुरुग्राम, हरियाणा, ई-मेल- sambherwal@yahoo.co.in

मन के तार

जब कहीं किसी दिल में
अंकुर उपजता है स्नेलह का,
मुझे नहीं पता क्यों होता है,
क्यूँन होता है।
जब नदिया दौड़ती है सागर की ओर,
मुझे नहीं पता क्यों दौड़ती है।
जब हवा चलती है सह्याद्रि से,
मुझे नहीं पता किस-किस के दिल को आर्द्र करती है।
परंतु जब किसी को किसी की याद आती है,
तो मुझे पता है, तुझे पता है,
वह याद दिल से निकल,
नदियों की लहरों पर दौड़,
हवा पर तैर,
हिमालय की गंध ले,
सिक्तय कर देती है
उसका तन-मन,
जिसकी याद आने के बाद
और कुछ याद नहीं रहता।
दूर बैठे भी कब मिल जाते हैं
मन के तार!

साहित्याकार

साहित्याकार साधक है।
साहित्या-सागर को
शब्दोंय की वैतरणी से पार करता हुआ
लक्ष्यय रूपी साहिल तक पहुँचता है।
जगती रूपी उपादानों का अवलंबन ले,
विचारों रूपी ताकत से खेता है।
अनुभूति रूपी श्रृंखला में
भंग रूपी ज्वाशरों को
मनोबल रूपी सेतु और
धैर्य रूपी बल से पाटता है।
शब्दोंर रूपी फूलों से वाक्यत रूपी माला बना
विचारों रूपी अर्घ्यी दे
साहित्य रूपी ईष्टस को समर्पित करता है।

अनुभूति

अनुभूति फाग के महीने में
फुदकती वह चिड़िया है,
जो घरों में जबरदस्ती घोसला बना लेती है।
जब वह आती है,
न पूछती है किसी से,
न डरती है किसी से,
बार’-बार की हटकार से
वह आना नहीं छोड़ती है,
घोंसला बनाकर ही रहती है।
कभी वह दबे पाँव आती है,
कभी सबकी कोशिशों को चुनौती देकर।
रात में वह वहीं कहीं छिप,
उसके सपनों को भी आशियाना बना लेती है
और जब तक नहीं उतर आती है
उसके मन में पूरी तरह,
नहीं मान लेता है मन उसे भी एक ताकत,
तब तक वह चहकती, फुदकती रहती है
वहीं, उसी आंगन में।
अपना अस्तित्वी जताकर ही रहती है।
अनुभूति फाग के महीने में
फुदकती चिड़िया है,
आकर ही रहती है।

सीता

मैं हूँ सीता, सत् की जननी
सत् की पालनहारिणी।
बेटा, पति, पिता या नाती,
सबकी मंगलहारिणी।
फिर भी समझी जाती हूँ मैं
केवल चरण-विहारिणी।
पितृ मेरा या भ्रातृ मेरा हो ,
पुलिस, पुरोहित, छात्र मेरा हो,
अफसर, मुल्लात और पुजारी,
सबके लिए भक्ष्यर है नारी।
वक्त -बेवक्तह सबके सब ये,
मेरा रक्तभ चूसते हैं ये।
लेना चाहते हैं निकाल ये
वह स्वार्ग का सुख मुझमें से,
जिसके भोग की भूख ललकती
इनको सुख व दुख में से !
मेरे लिए नियम है 'सीता'
फिर भी मैं तो रही क्रीता,
किसी चीज के क्रय की भाँति,
जिसने चाहा, मुझे खरीदा!
कैसे कहूँ है कोई रक्षक?
तोड़ो माँ, बेटी का मिथक।
कहो स्वायं को पुरुष मात्र ही
और मुझे तो गात्र मात्र ही,
ताकि मैं भी, तुम भी समझो –
'इस सीता के शीलहरण से,
शीलहरण न हुआ किसी का,
मुझे भ्रम न रहे यह कि
कोई मेरा भाई भी था!'

डॉ. रचनासिंह 'रश्मि'

साहित्यकार, सोशल एक्टिविस्ट
पर्यावरणविद

मजदूर हूं

मैं मजदूर हूं
रंजो गम से
भरपूर हूं
फटे चीथड़ो में
गांव मिट्टी घर से दूर
दो वक्त की रोटी को
मजबूर हूं
घर ना ठिकाना
खुले आसमां के नीचे
सोने को मजबूर हूं
करके मेहनत
थककर चूर हूं
तपती धूप में
पसीने से भरपूर हूं
वोटों की गिनती में
जरूर हूं
सरकारी सुविधाओं
से दूर हूं
मैं हर जगह मजूद हूं
सबसे करिब फिर भी
सबसे दूर हूं
क़िस्मत से मजबूर
भारत की तकदीर हूं
उनके हिस्से सुख
मेरे हिस्से में दुख
मैं इतना क्यों!
मजबूर हूं
क्योंकि! मैं मेहनतकश
मजदूर हूं